RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष- 15 वां | अंक 57 | नवम्बर-जनवरी 2021

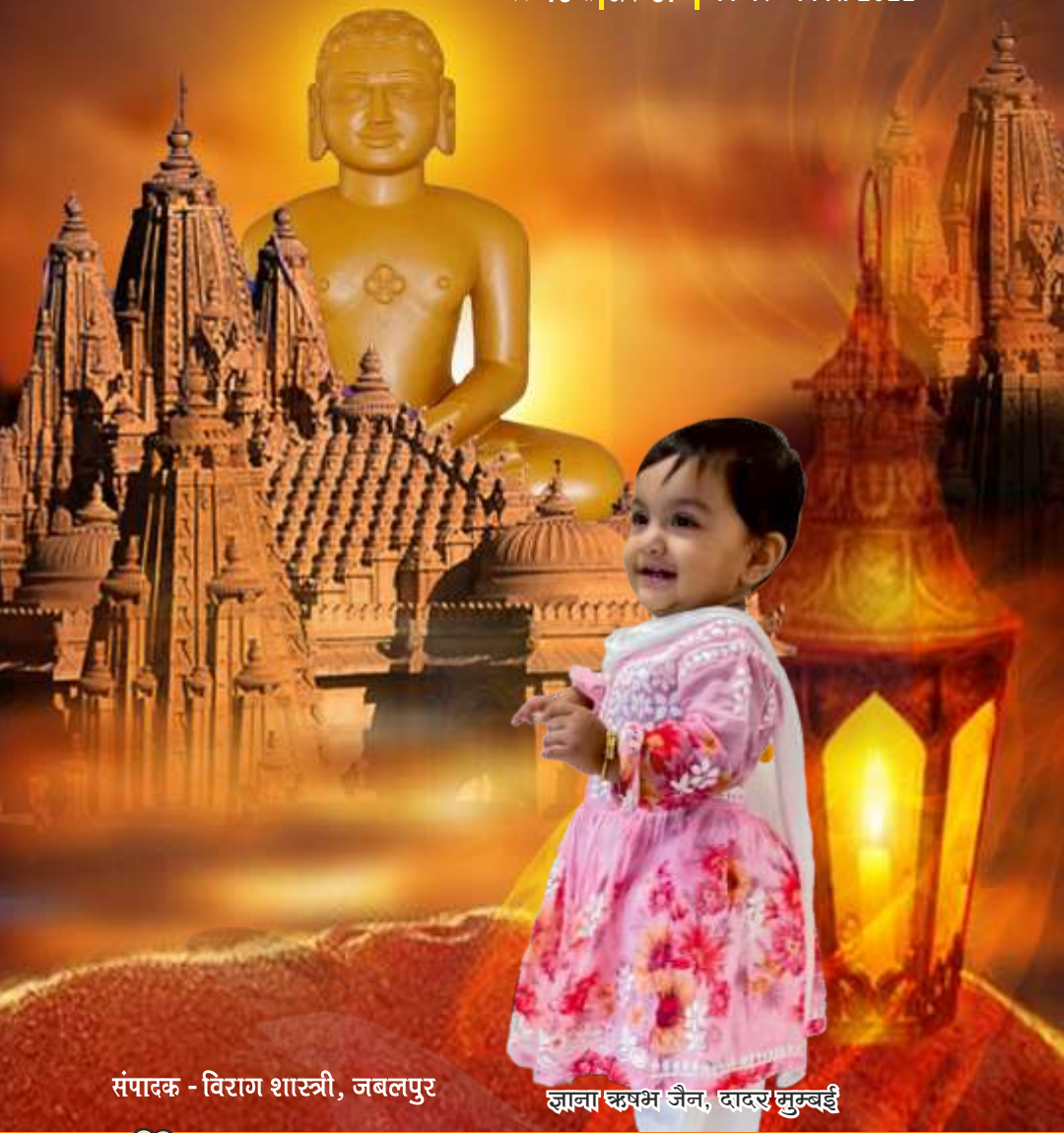

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

ज्ञाना ऋषभ जैन, दादर मुम्बई

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

इस अंक के प्रकाशन में
श्री राजेन्द्र भाई, मणिलाल भाई जैन
दादर मुंबई ने 21000/-रुपये
की राशि का सहयोग किया है ।
अतः उनको आभार

अपने पुण्य के उदय का सदुपयोग कीजिये । देखिये जीवन के लिये संघर्ष

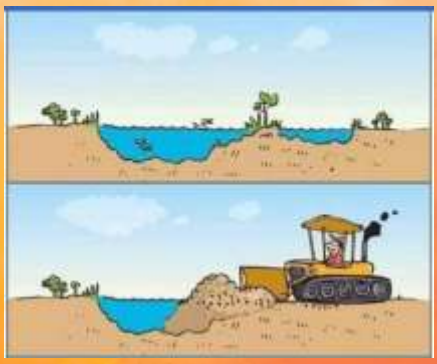

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1	13	निर्लोभी रैदास	16
2	हमारे तीर्थ – गिरनारजी	2	14	वे कौन थे ?	17
3	संपादकीय	3–4	15	कहीं देर न हो जाये	18–19
4	परिणामों की विचित्रता	5	16	पटाखे पर बैन	20
5	अब नहीं फेकूंगा	6–7	17	सद्गुरु कैसे न कहूँ/करुणामूर्ति गुरुदेवश्री	21
6	उल्टे-पुल्टे अक्षर.....	7	18	धन्य मुनिराज हमारे	22–23
7	दीवान टोडरमल का अद्भुत त्याग	8–9	19	आपके प्रश्न समाधान जिनवाणी के	24
8	प्रेरक प्रसंग – पीड़ा	9	20	समाचार	25–28
9	हमारा गौरवशाली इतिहास	10	21	शाकाहारी जानवरों की पहचान	29
10	लोभ का फल	11–12	22	मांसाहारी जानवरों की पहचान	30
11	पापी से परमात्मा	13–14	23	जन्म दिवस/कविता मायाचारी की दशा	31
12	सही फैसला	15	24	कविता – टन-टन/सत्य	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क -500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

गिरनारजी

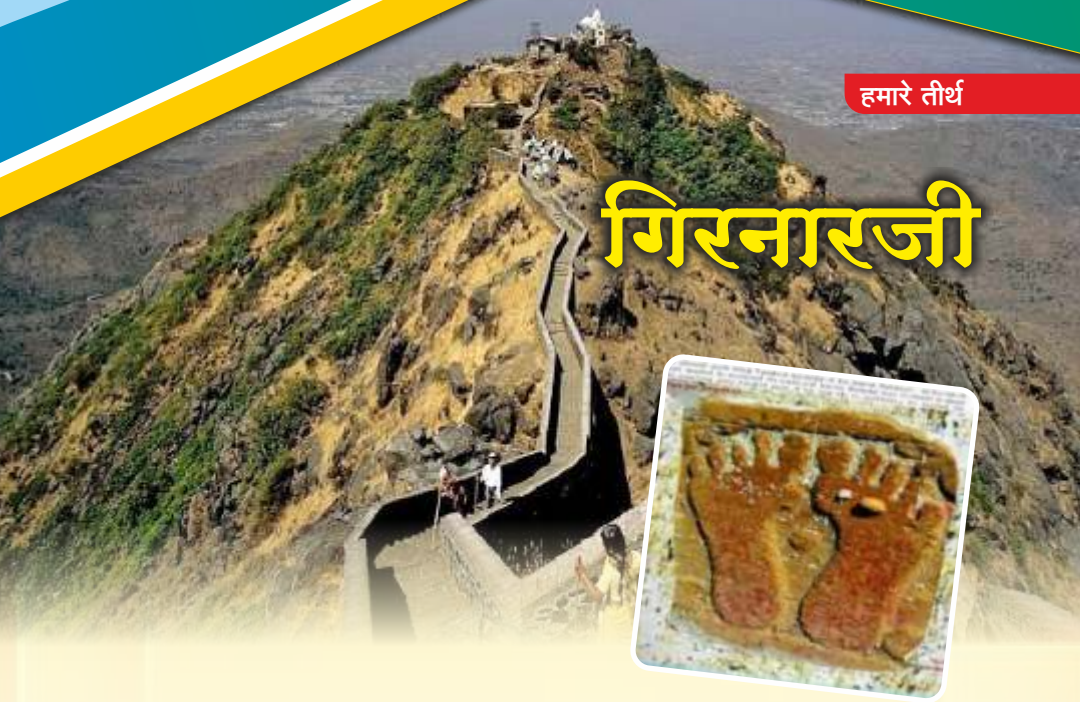

गुजरात प्रांत के जूनागढ़ जिले से 7 किमी की दूरी पर स्थित गिरनारजी परम पावन सिद्ध क्षेत्र है। यहाँ से हमारे 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथजी ने निर्वाण पद की प्राप्ति की। इसी भूमि पर भगवान नेमिनाथ को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस क्षेत्र की एक और महिमा यह भी है कि इसी गिरनार क्षेत्र पर आचार्य धरसेन स्वामी ने अपने दो योग्य शिष्यों मुनिराज भूतबली एवं मुनिराज पुष्पदंत को जैन आगम का ज्ञान प्रदान किया। बाद में इन्हीं शिष्यों ने षटखण्डागम ग्रंथ की रचना की और जिस दिन इस ग्रंथ रचना पूर्ण हुई थी उस दिन सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज श्रुतपंचमी पर्व के रूप में मनाता है।

गिरनारजी पर पाँच पहाड़ हैं तथा पहाड़ पर एक जिनमंदिर और चरण हैं। नीचे तलहटी पर भी अनेक भव्य जिनमंदिर हैं। साथ ही भोजन और आवास की समुचित सुविधायें उपलब्ध हैं। जीवन में कम से कम एक बार इस क्षेत्र की वंदना अवश्य करना चाहिये। यह सिद्धभूमि सोनगढ़ से 200 किमी, पालीताना से 230 किमी, राजकोट से 100 किमी की दूरी पर है। **संपर्क सूत्र : 0285-2621519 / 2627108 / 2654108**

संपादकीय -

एक पिता की प्रेरणा जो क्रांति बन गई

बात मेरे बचपन की है जब हर दीपावली पर मेरे पापा मुझे मेरी जिद पर मुझे 50 रुपये पटाखे खरीदने के लिये देते थे, वे मेरी जिद पर 50 रुपये दे तो देते थे परन्तु साथ में अध्यापक होने के नाते यह भी कह ही देते कि पटाखे फोड़ना मतलब रुपयों की बरबादी है, आखिर इससे मिलता ही क्या है ? परन्तु हम भी जिद के पक्के। पापा की बात न मानने की तो मानो कसम ही खाई थी। कुछ वर्ष बाद पापा ने कहा कि यदि पटाखे फोड़ोगे तो 50 रुपये मिलेंगे और नहीं फोड़ोगे तो 100 रुपये। बस इसी लोभ ने पटाखे फोड़ना बंद करवा दिया और पापा से समय - समय पर मिलने वाली शिक्षा व प्रेरणा ने मन कब गहरा स्थान ले लिया ? पता ही नहीं चला।

जयपुर से शास्त्री करने के बाद 1998 में सहज संयोग से दिल्ली के उपनगर नांगलोई में कार्य करने का अवसर मिला। पुराने अंकुर यहाँ पल्लवित होने लगे और चारों ओर पटाखों से होने वाली बरबादी और शोर न कुछ नया करने का संकल्प पैदा कर दिया। उस समय न तो किसी से अधिक परिचय था न ही ऐसी स्थिति की अपने खर्च पर कुछ काम किया जाये। लेकिन काम तो करना ही है बस इस जुनून ने रास्ता भी बना दिया। कुछ दिनों की मेहनत के बाद पटाखे से होने वाली हानियों के बिन्दु तैयार किये और उनको एक छोटे से पोस्टर में तैयार करने का निर्णय किया। जब एक प्रेस वाले से संपर्क किया तो उसने मेरी प्रकाशन में अनुभवहीनता का भरपूर लाभ उठाते हुये 1500 पोस्टर का 4000 रुपये बजट दिया और पोस्टिंग खर्च तो अलग था ही। खैर दिल्ली के ही दो परिचित साधर्मियों ने 2000 रुपये का सहयोग किया और मेरी छोटी सी वेतन राशि से 2000 रुपये मिलाकर पोस्टर छपा ही दिया। यह उस समय पटाखा के विरुद्ध अलख जगाने का देश का संभवतः प्रथम प्रयास था। फिर उपलब्ध जिनमंदिरों, संस्थाओं और चातुर्मास कर रहे मुनिराजों के पते एकत्रित किये और पोस्टर भेजना प्रारंभ किये। उस समय न तो कोई सहयोगी था न ही कोई कार्यकर्ता। स्वयं ही रात में 2 बजे तक पोस्टर फोल्ड करता, उन्हें लिफाफे में पैक करता और हाथ ही सबके पते लिखता और दूसरे दिन पोस्ट

करता। इसमें कई दिन लग गये। आखिरकार लोगों न केवल बात पहुँची बल्कि पसंद भी आई।

फिर अगले वर्ष जबलपुर आ गया। छोटे पोस्टर से बड़े पोस्टर का रूप हो गया और विषय वस्तु परिमार्जित और परिवर्धित भी। जबलपुर आने के बाद यह काम व्यापक स्तर पर होने लगा और साधर्मियों का थोड़ा बहुत सहयोग भी मिलने लगा। कुछ लोग इस काम को अनावश्यक और फिजूलखर्च बताकर उत्साह गिराने का पूरा प्रयास करते (यह समस्या तो हर काम के साथ रही।) लेकिन काम तो होना ही था। उस समय मोबाइल था नहीं और साधन बहुत सीमित। वह टाइपराइटर का समय था। पोस्टर प्रकाशन के लिये साधर्मियों के लिये पत्र टाइप करवाने के लिये घंटों बैठना पड़ता, यह बहुत मेहनत का कार्य था और सहयोग लगभग नहीं के बराबर ही मिलता था। जबलपुर के जिनमंदिरों में जाना, पोस्टर चिपकाना, विद्यालयों में जाकर पटाखों के दुष्प्रभाव समझाना आदि कार्य होने लगे। फिर इस कार्य में सहयोग मिलने लगा जैन युवा फैडरेशन जबलपुर के युवा साथियों का । उसके कुछ वर्ष बाद देश की अनेक जैन एवं जैनेतर संस्थाओं ने यह पोस्टर प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया। कई मुनिराजों और संस्थाओं के संदेश पर हमने उन्हें पूरी डिजाईन भी बिना शर्त दी क्योंकि उद्देश्य की सफलता ही मेरा लक्ष्य था यश नहीं। मुझे तो बस काम करना था और इसका सुखद फल भी मिलने लगा था।

समय के साथ सफलता भी बढ़ने लगी। जब यह लगने लगा कि देश की अनेक संस्थायें यह कार्य करने लगीं हैं तो 2011 में यह कार्य बंद कर दिया। कुछ संस्थाओं ने इस अभियान को प्रारंभ करने वाली हमारी संस्था का हमेशा आभार व्यक्त किया और अनेक ने नहीं। आज इस अभियान के आधुनिक रूप दिखाई देने लगे हैं। आज सामाजिक संस्थायें, माननीय न्यायपालिका और सरकारों को पटाखों से होने वाली भीषण बरबादी के बारे में सोचने पर मजबूर होना पड़ा है। यह बात परम सत्य है कि हमारा यह प्रयास इस अविवेकपूर्ण और भोगवादी जगत में बहुत छोटासा ही है लेकिन भयंकर अंधियारे में छोटे दीपक की रोशनी प्रकाश का ही काम करती है। हम दीपक बनकर ही अंधियारे का सामना कर सकें - बस यही जुनून और भावना काम करने की प्रेरणा बन गई। मैं उन तमाम संस्थाओं, व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने इस अभियान को अपनाया, फैलाया और सहयोग प्रदान किया और भगवान महावीर के शासन को गुंजायमान किया और मेरे पिता को नमन जो इस विशाल अभियान की प्रेरणा बने।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

परिणामों की विचित्रता

सीता का भाई भामण्डल एक दिन वज्रांक मुनिराज को आहार देकर अपने महल की छत पर बैठा हुआ था और ऊपर आकाश की ओर देख रहा था। आकाश में बादलों के अलग-अलग आकार बन रहे थे और बिगड़ रहे थे। कभी कोई महल का आकार बन जाता तो कभी घोड़े का और फिर थोड़ी देर में वह आकार गायब हो जाता था।

भामण्डल सोचने लगा कि इस तरह मेरा यौवन और वैभव भी नष्ट हो जायेगा, इसलिये जब तक युवावास्था है तब तक जी भरकर भोगों का सुख लेना चाहिये, अन्यथा बुढ़ापा आने पर इन्द्रियाँ कमजोर हो जायेंगी और सारा आनंद बिगड़ जायेगा। यह जवानी भोगों के लिये है जब बुढ़ापा आयेगा तब धर्म कर लेंगे । अभी तो धर्म करने के लिये सारी जिन्दगी पड़ी है।

जिन बादलों के विघटन को देखकर महापुरुष धर्मात्माओं को वैराग्य आ जाता था और मुनि दीक्षा लेकर आत्मकल्याण के लिये निकल पड़ते थे आज वैसे ही निमित्त मिलने पर भामण्डल को भोगों को भोगने की आकुलता हो रही थी। इतने में आकाश से भामण्डल के ऊपर बिजली गिरी और भामण्डल का प्राण निकल गये। वह मरकर नरक चला गया।

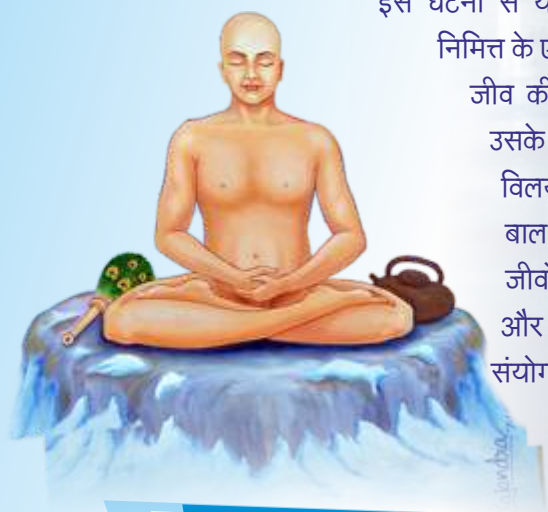

इस घटना से यह शिक्षा मिलती है कि निमित्त के एक जैसे होने पर भी जिस जीव की जैसी योग्यता होती है उसके वैसे परिणाम होते हैं। मेघ विलय, तारा टूटना, सिर पर बाल सफेद देखकर किन्हीं जीवों को वैराग्य आ जाता है और किन्हीं को अपने भोग, संयोग की चिन्ता होती है।

अब नहीं फेकूँगा

अरे मम्मी! जरा जल्दी से बालकनी में आना..

क्या हुआ बेटा? क्यों शोर मचा रहे हो?

मम्मी ! आप जल्दी आईये न....

आ रही हूँ, पता नहीं तेरी शरारतें कब कम होंगी ... पता नहीं अब क्या कर दिया तूने...

अरे मम्मी! मैंने कुछ नहीं किया आप आईये तो

लो आ गई, अब बोलो क्या हुआ ?

देखो ना मम्मी वह चिड़िया नीचे गिरी पड़ी है...

अरे हाँ ! लगता है इसे कुछ हो गया है।

मम्मी! लगता है इसे सांस लेने में परेशानी हो रही है।

हाँ बेटा! तुम जल्दी से पानी लेकर आओ

हाँ! अभी लेकर आया..

लो मम्मी! पानी

अरे मम्मी! इसके मुंह से तो पेट की सारी गंदगी बाहर निकल रही है। लगता है इसके गले में कुछ फंस गया था।

हाँ! अब ये चिड़िया ठीक हो जायेगी।

मम्मी! चिड़िया तो मरते - मरते बच गई..

बच गई इसके भाग्य से.. वरना तुम्हारी लापरवाही से इसकी तो जान ही चली जाती...

पर मैंने क्या किया मम्मी! बल्कि मैंने तो इसकी जान बचाने की कोशिश की है।

पहले मारो, फिर बचाओ, इसमें क्या अक्लमंदी है?

पर मैंने किया ही क्या है? जरा मुझे बतायेंगी आप ..

हाँ! क्यों नहीं जरा गौर से देखो.. चिड़िया के पेट से जो गंदगी बाहर निकली उसमें ये नाखून भी हैं।

हाँ! मम्मी दिखाई दे रहा है..

मैं तुम्हें हमेशा कहा करती थी कि नाखून काटकर एक कागज में बांधकर डस्टबिन में फेंका करो, पर तुम तुम मेरी बात कभी नहीं मानते और हमेशा नाखून यहाँ- वहाँ फेंक दिया करते हो। आज तुम्हारी लापरवाही से चिड़िया मरते-मरते बची।

हाँ मम्मी! मेरी ही लापरवाही से चिड़िया की यह हालत हुई है। सॉरी मम्मी! आगे से ध्यान रखूँगा और नाखून को कागज में बांधकर डस्टबिन में फेकूँगा।

सिर्फ नाखून की बात नहीं है बेटा। कोई भी कचरा हो उसे उचित स्थान पर ही फेंकना चाहिये। परसों तुम घूमते हुये मिठाई खा रहे थे और थोड़ी सी मिठाई जमीन पर गिर गई थी। शाम को सैकड़ों चीटिंयां हो गईं थीं और न जाने कितनी तो मर गईं थीं।

हाँ मम्मी! सॉरी।

बेटा ! हम जैन कुल के हैं और अहिंसा हमारी पहचान है। बिना कारण जीवों की हिंसा से बहुत पाप लगता है और उन जीवों की मृत्यु हो जाती है।

हाँ मम्मी! मैं वादा करता हूँ कि आगे से ऐसी कोई भी गल्ती नहीं करुँगा।

उल्टे-पुल्टे अक्षरों से सही शब्द बनाइये

1. म त ा अ
2. म स स ा य र
3. त च ा न `
4. ि प्र हर्य ा त ा
5. म र ण ा ` ा
6. म त स ि ि
7. ा त य ि प्र श च
8. ा य म ि क ा स
9. र ा ा पु प व ी
10. ग प ढ़ ा व ा
11. न श ु ि द अ
12. ि ल स ा द्ध य
13. न व च प्र
14. य व ि द न. ठ ६ ि
15. ल न व ज्ञ के ा

इस पहेली के उत्तर इसी अंक में दिये गये हैं ।

दीवान टोडरमल का अद्भुत त्याग

जैन धर्म के अनेक महापुरुषों ने अपने कार्यों से जैन धर्म के गौरव में विशाल वृद्धि की है। ऐसे ही एक महापुरुष थे दीवान श्री टोडरमलजी जैन। सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने कुछ कारणों से आनंदपुर साहिब छोड़ दिया। उनका परिवार सरसा नदी के किनारे बिछड़ गया। गुरु गोविन्द सिंह अलग हो गये और उनकी माता गुजरी और दोनों बेटे बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह अलग गये। उस समय इन दोनों बेटों की उम्र मात्र 9 वर्ष की थी। बाद में उनका सेवक गंगू माता और दोनों बेटों को अपने गांव ले गया। गंगू ने विश्वासघात करते हुये इनाम के लोभ में नबाब वजीर खां को इसकी सूचना दे दी। सूचना के आधार पर दोनों बेटों को पकड़कर वजीर खां के सामने पेश किया गया। नबाब ने दोनों बेटों ने उनसे मुस्लिम धर्म स्वीकार करने का दबाब बनाया। परन्तु दोनों बेटों ने वजीर खां के प्रस्ताव को मानने से मना कर दिया और शहीद होने के लिये तैयार हो गये इससे क्रोधित होकर वजीर खां दोनों बेटों को दीवार में जिंदा चुनवा दिया। (पहले क्रूर शासक सजा देने के लिये जीवित व्यक्ति को बांधकर उसके चारों ओर दीवार खड़ी करवा देते थे। जिसके कारण सजा पाने वाला व्यक्ति दम घुटने से या भूख-प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाता था। इसे ही दीवार में चुनवाना कहा जाता था।)

जब माता गुजरी को इस घटना की जानकारी हुई तो दुखी होकर उनके प्राण निकल गये। वजीर खां के डर इन तीनों के शव को जलाने के लिये कोई नहीं आया। तब दीवान श्री टोडरमलजी जैन अपना दायित्व निभाते हुये आगे आये और वजीर खां से अंत्येष्टि के लिये उन तीनों के शव को मांगा और जहाँ दोनों पुत्र शहीद हुये वहीं पर अंत्येष्टि करने की मांग की। तब वजीर खां शव न देने के लिये विचित्र नियम रखते हुये कहा कि जितनी जगह पर अंत्येष्टि करना है उतनी जगह पर सोने की मुहरें बिछाना होगी। ये मुहरें उस जगह की कीमत होगी। दीवान टोडरमलजी ने अपनी संपत्ति का प्रयोग करते हुये उस स्थान पर सोने की मुहरें बिछा दीं। तब वजीर खां ने परेशान करने के लिये सोने की मुहरें बिछाकर नहीं खड़ी करके रखना होगी। तब दीवान साहब ने अपनी बहुत संपत्ति बेचकर

78000 सोने की मुहरें उस जगह पर खड़ी कर दीं। यह जगह मात्र 12 फुट थी। इस जगह को खरीदकर माता और दोनों बेटों की अंत्येष्टि की गई। यह देखकर वजीर खां को बहुत क्रोध आया और उसने दीवान टोडरमलजी को हवेली छोड़ने का आदेश दिया तब दीवानजी ने अपनी भव्य हवेली छोड़ दी और पंजाब के किसी अनजान स्थान पर चले गये।

जब गुरु गोविन्दसिंह को पूरी घटना मालूम चली तो उन्होंने दीवानजी के प्रति आभार ज्ञापित किया और दीवानजी से इस उपकार के लिये कुछ मांगने के लिये कहा। तब दीवानजी ने कहा - यदि आप कुछ देना ही चाहते हैं तो कुछ ही ऐसा कर दीजिये कि मेरा वंश ही खत्म हो जाये। दीवानजी की इस अजीब सी इच्छा सुनकर गुरु गोविन्दसिंहजी ने इसका कारण पूछा तो दीवानजी कहा कि जो संपत्ति खर्च कर मैंनें आपके पुत्रों और माताजी की अंत्येष्टि की है मैं नहीं चाहता कि मेरे वंश का कोई व्यक्ति यह कहे कि यह भूमि मेरे पूर्वजों ने खरीदी है। यह निःस्वार्थ त्याग की मिसाल।

प्रेरक प्रसंग

पीड़ा

अरे नामू! तेरी धोती में तो खून लगा हुआ है। कहीं चोट लग गई क्या ? माँ ने बेटे से पूछा।

हाँ माँ! मैंने अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली है - नामू ने उत्तर दिया। माँ ने धोती ऊपर करके देखा कि नामू के पैर की चमड़ी छिली हुई थी और खून बह रहा था। माँ बोली - मूर्ख! कहीं कोई अपने आप को मारता है क्या ? क्या तुम्हें दर्द नहीं हो रहा? अरे! यह घाव पक जायेगा तो पैर काटना भी पड़ सकता है।

तब तो पेड़ पर कुल्हाड़ी का वार करने से उसे भी दर्द होता होगा, माँ उस दिन आपने पलाश के पेड़ की छाल मंगवाई थी, तब मैंने कुल्हाड़ी से ही छीलकर छाल निकाली थी। मैंने उसी समय सोचा था कि अपने पैर को भी कुल्हाड़ी से छीलकर देखूँगा तो मालूम चल जायेगा कि पेड़ को कैसा लगा होगा? बस यही देखने के लिये कुल्हाड़ी से अपने पैर की चमड़ी छील ली है माँ।

बेटे के ये शब्द सुनते ही माँ रो पड़ी और बोली - बेटा! तू बड़ा होकर महान व्यक्ति बनेगा। तू सच कहता है - पेड़ पौधों और अन्य जीव जन्तुओं में भी प्राण होते हैं और उन पर वार करने से उन्हें भी वेदना होती है।

बड़ा होने पर यही नामू सन्त नामदेव के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हमारा गौरवशाली इतिहास

प्राचीनकाल से जैन धर्म का समृद्धशाली इतिहास रहा है। आध्यात्मिक और साहित्यिक रूप से समृद्धता के साथ पुरातात्विक दृष्टि से जैन धर्म का विपुल वैभव मिलता है। ये कर्नाटक के चिकमंगलूर जिले के बेलवादी में स्थित वीरा नारायण मंदिर के चित्र हैं। यह हिन्दू मंदिर के रूप बहुत प्रसिद्ध है। परन्तु इस हिन्दू मंदिर के नाम से प्रसिद्ध मंदिर के बाहर विराजमान जैन प्रतिमायें इसके जैन मंदिर होने की प्रसिद्धि करतीं हैं। इस मंदिर के बाहर मानस्तंभ विराजमान है और मानस्तंभ जैन मंदिरों की एक महत्वपूर्ण रचना रही है। हिन्दू मंदिरों में मानस्तंभ का कोई महत्व नहीं है। इस मंदिर को 12वीं शताब्दी में वीर उल्लाला द्वितीय ने बनवाया था। वीर उल्लाला विष्णुवर्धन के पोते थे और जैन धर्म के अनुयायी थे। बाद में विष्णुवर्धन ने हिन्दू धर्म अपना लिया था।

कथा सुनो पुराण की :

लोभ का फल

राजा अभयवाहन चम्पापुरी में राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम पुण्डरिका था। इसी चम्पापुर नगर में लुब्धक सेठ अपनी रानी नागवसु और गरुडदत्त और नागदत्त पुत्र के साथ रहता था।

लुब्धक सेठ बहुत धनवान था पर बहुत कंजूस भी। उसे सोने के पशु पक्षियों बनवाकर उसे रखने का बहुत शौक था। उसने बहुत धन खर्च करके बड़े आकार के यक्ष, पक्षी, हाथी, ऊंट, घोड़ा, सिंह आदि अनेक पशुओं की जोड़ी सोने से बनवाकर उसे अपने घर के एक कमरे में सजाकर रखा। जो कोई भी इस प्रदर्शनी को देखता वह लुब्धक सेठ की बहुत प्रशंसा करता था। लुब्धक भी अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न होता था। वह एक बैल की जोड़ी बना रहा था। उसने एक बैल तो बना लिया परन्तु दूसरे बैल के लिये उसके पास सोना समाप्त हो गया। उसे इस बात की बहुत चिन्ता हो गई कि सोना न होने से दूसरा बैल कैसे बनेगा ? वह इस कमी को पूरा करने का प्रयास करता रहता था और बहुत काम करता था। एक बार सात दिन तक लगातार बारिश होने से नगर के सभी नदी-नाले-तालाब भर गये। वह लुब्धक सेठ बारिश में स्वयं लकड़ियाँ लेने के लिये जंगल गया और सिर पर लकड़ियाँ लेकर वापस आ रहा था। उसी समय रानी पुण्डरिका राजा के साथ अपने महल में खिड़की के पास बैठकर सुहावने मौसम का आनंद ले रही थी उसने वहीं से लुब्धक को लकड़ी लाते हुये देखा तो उसे बहुत दया आई और उसने राजा से कहा कि प्राणनाथ! आपके राज्य में यह कोई बहुत निर्धन व्यक्ति है। देखिये, बारिश में भी लकड़ियों को अपने सिर पर लेकर जा रहा है। आप इस व्यक्ति की कुछ सहायता करें जिससे इसका दुःख दूर हो सके।

राजा ने तुरन्त ही सेवकों से कहकर लुब्धक को बुलाया और कहा कि तुम्हारे घर की हालत ठीक नहीं है, इसलिये तुम्हें जितने रुपयों की आवश्यकता हो उतने रुपये राजकोष से ले लो। इस पर लुब्धक ने कहा - महाराज ! मुझे कुछ नहीं

चाहिये। मेरे पास एक बैल है बस मुझे तो उस बैल की जोड़ी के लिये बस एक बैल और चाहिये। राजा ने कहा - तो ठीक है हमारे पास सैकड़ों बैल हैं जो तुम्हें पसंद हो तुम एक बैल ले जा सकते हो। तब लुब्धक ने कहा कि महाराज ! आपके बैलों में से एक भी बैल मेरे पास रखे बैल जैसा नहीं है। यह सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ उसने पूछा कि भाई! तुम्हारा बैल कैसा है? मैं तुम्हारे घर पर रखा बैल देखना चाहता हूँ। तब लुब्धक राजा को अपने घर ले गया। राजा लुब्धक के घर की प्रदर्शनी और उसके वैभव को देखकर आचर्यचकित रह गया। उसने सोने का बैल भी देखा। राजा को अपने घर आया देखकर लुब्धक की पत्नी नागवसु बहुत प्रसन्न हुई। वह सोने की थाली को बहुमूल्य रत्नों से भरकर लाई और अपने पति को देते हुये कहा कि यह थाली महाराज को भेंट दे दीजिये। थाल को रत्नों से भरा हुआ देखकर लुब्धक बहुत दुःखी हुआ, परन्तु महाराज के सामने वह अपनी पत्नी को मना भी नहीं कर सकता था। महाराज को थाल देते समय उसके हाथ थर-थर कांपने लगा। उसे लगा कि उसकी मेहनत से कमाया हुआ यह धन राजा को भेंट देना पड़ रहा है। जैसे ही उसने महाराज को थाल देने के लिये हाथ आगे बढ़ाया महाराज को उसके हाथों की उंगलियाँ सांप के सिर के समान लगने लगीं। जिसने जीवन में किसी को एक पैसा भी दान न दिया हो वह अपने रत्न कैसे किसी को दे सकता था । राजा उसके मन के भाव को समझ गया और वह उसी समय उसके घर से अपने महल वापस आ गया।

लुब्धक धन कमाने के लिये सिंहल द्वीप गया। वहाँ उसने चार करोड़ का धन कमाया और जब वह धन कमाकर कर जहाज से वापस आ रहा था तब समुद्र में तूफान आ जाने से पूरा जहाज समुद्र में डूब गया और लुब्धक उसमें डूबकर मर गया। वह आर्तध्यान से मरकर अपने घर में ही सर्प बन गया। वहाँ भी वह अपने धन के आसपास ही घूमता रहता था यदि कोई उस धन के पास भी आता था तो वह उसे डराकर भगा देता था। सर्प को धन के ऊपर बैठा हुआ देखकर लुब्धक के पुत्र गरुड़दत्त को बहुत क्रोध आया और उसने उस सर्प को मार डाला। वह सर्प मरकर चौथे नरक चला गया।

इस प्रकार जीव तीव्र कषायों के परिणाम के फल में दुर्गतियों में भयंकर दुख भोगता है। इसलिये सुख प्राप्त करने के लिये कषायों से दूर अपने आत्म स्वभाव की आराधना करना चाहिये।

कथा सुनो पुराण की-

पापी से परमात्मा

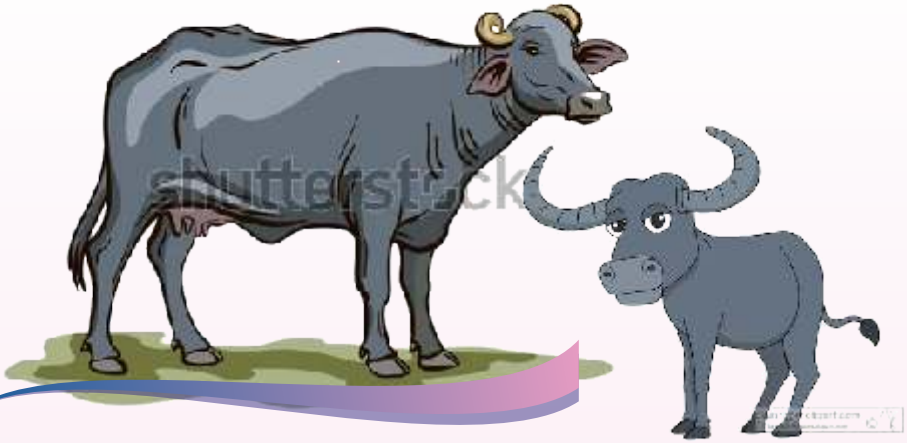

श्रावस्ती नगर का राजा जितशत्रु था और उसके पुत्र का नाम मृगध्वज था। उसी नगरी में एक सेठ कामदत्त रहता था। एक दिन वह अपनी गाय - भैंसों को देखने आया तब एक भैंस का बच्चा सेठ के पैरों पर गिर पड़ा और सेठ के पैर चाटने लगा। सेठ ने ग्वाले से पूछा कि यह क्या कर रहा है ग्वाले ने कहा सेठ जी जिस दिन यह भैंस का बच्चा पैदा हुआ उस दिन भी यह मेरे भी पैरों पर गिर गया था। मुझे इस पाड़े (बच्चे) पर बहुत दया आई और मुझे इससे बहुत स्नेह हो गया। वैसे तो इस गौशाला में भैंसे और गायें हैं पर इस बच्चे के प्रति स्नेह अधिक होने से मुझे भी आश्चर्य हुआ। एक दिन में जंगल में आये मुनिराज से मैंने इस स्नेह का कारण पूछा तो मुनिवर ने कहा कि हे ग्वाल ! तेरी इस भैंस से यह बच्चा (पाड़ा) पहले भी पाँच बार जन्मा और तूने इसे मार डाला, फिर ये छठवीं बार इसी भैंस के गर्भ से जन्मा और इस बार तुझे देखकर इसे पूर्व भव याद आ गये हैं और अब यह डरकर आपके पैरों पर गिरकर प्रार्थना कर रहा कि अब मुझे मत मारना।

जब मैंने मुनिराज से यह सब घटना सुनी तो मैंने इस पाड़े का बेटे की तरह पालन पोषण किया और यह अब आपके पैरों पर गिरकर अपने प्राणों की रक्षा चाह रहा है। ग्वाले की बात सुनकर सेठ ने पाड़े को अभयदान दिया और उसका विशेष ध्यान देने का आदेश दिया।

एक दिन पूर्व भव के बैर के कारण राजा के पुत्र मृगध्वज ने उस पाड़े का पैर काट दिया, तब राजा ने अपने आदेश को भंग करने के अपराध में पुत्र को फांसी की सजा का आदेश दिया। राजा का मंत्री बुद्धिमान था। वह फांसी देने के बहाने मृगध्वज को जंगल में एक मुनिराज के पास ले गया और समझाकर मुनि दीक्षा दिलवा दी।

इधर वह पाड़ा भी पैर कट जाने के कारण 18वें दिन शुभभाव से मरकर स्वर्ग में देव बन गया और राजकुमार को भी मुनि बनने के बाद संसार का स्वरूप समझ में आ गया और आत्म साधना में प्रवृत्त हो गया। कुछ समय के बाद शुक्ल ध्यानपूर्वक केवलज्ञान प्राप्त हो गया। उन केवली भगवान की पूजा करने के लिये देव और मनुष्य आये। राजा जितशत्रु भी उनके पास आये और केवली भगवान से पाड़े के प्रति बैर का कारण पूछा तो मृगध्वज केवली की वाणी में आया कि प्रथम नारायण त्रिपृष्ठ जिसका शत्रु अश्वग्रीव प्रथम प्रतिनारायण था। अश्वग्रीव का मंत्री हरिश्मश्री थ। युद्ध में त्रिपृष्ठ नारायण ने अश्वग्रीव को मार दिया और विजय नाम के बलभद्र ने मंत्री हरिश्मश्री को मारा। अश्वग्रीव और हरिश्मश्री दोनों मरकर नरक चले गये। लाखों वर्षों तक चार गति में भ्रमण कर अश्वग्रीव का जीव मैं मृगध्वज हुआ और हरिश्मश्री का जीव यह भैंस का बच्चा हुआ है। पहले जन्म के बैर के कारण मैंने इस पाड़े का पैर तोड़ा और वह पाड़ा का जीव लोहित नाम का देव हुआ। वह देव भी यहाँ आया है। हे राजन् ! इस लोक में सभी जीवों के साथ मित्रता का भाव रखना चाहिये।

केवली भगवान के वचन सुनकर राजा आदि अनेक जीवों ने जिनदीक्षा ली और मृगध्वज केवली भी अपनी आयु पूर्ण मोक्ष पधारे।

आपका संबल हमारा प्रयास

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें ।

शिरोमणि परम संरक्षक	1,00,000/- रु.
परम संरक्षक	51,000/- रु.
संरक्षक	31,000/- रु.
परम सहायक	21,000/- रु.
सहायक	11,000/- रु.
सहायक सदस्य	5,000/- रु.
सदस्य	1,000/- रु.

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट अथवा चैक बनाकर प्रेषित करें अथवा आप **''चहकती चेतना''** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

सही फैसला

घटना अमेरिका के पलोरिडा शहर की है। यहाँ एक 15 साल का लड़का एक जनरल स्टोर से चोरी करते पकड़ा गया। गार्ड की पकड़ से छूटने की कोशिश में उससे स्टोर का एक काँच भी टूट गया । पुलिस ने उसे गिरपतार करके कोर्ट में पेश किया। जज ने अपराध सुना और उस लड़के से पूछा कि लड़के सच बताओ क्या तुमने स्टोर से कुछ चुराया था ?

लड़के ने आंखें नीचे करके उत्तर दिया - हाँ! ब्रेड और पनीर।

जज - क्यों ?

लड़का - मुझे उसकी जरूरत थी।

जज - तो खरीद लेते।

लड़का - पैसे नहीं थे।

जज - तो घर वालों से लेते।

लड़का - घर में सिर्फ माँ है और वह बीमार है और वह कोई काम नहीं करती, ब्रेड और पनीर भी मैंने माँ के लिये चुराया था।

जज - तुम कोई काम नहीं करते क्या ?

लड़का - करता था। कुछ दिन पहले माँ अधिक बीमार हो गई तो एक दिन काम पर नहीं गया तो दुकान मालिक ने मुझे काम से निकाल दिया।

जज - तो किसी की मदद मांग लेते ।

लड़का - सुबह से घर निकला था। लगभग 50 लोगों से हेल्प मांगी पर किसी ने हेल्प नहीं की, बाद में चोरी की।

बहस समाप्त हुई और जज ने फैसला सुनाना शुरु किया और कहा कि चोरी और वह भी ब्रेड की, यह बहुत बड़ा अपराध है और इस अपराध के लिये हम सब जिम्मेदार हैं। अदालत में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति अपराधी है इसलिये यहाँ पर उपस्थित हर व्यक्ति पर दस-दस डालर का जुर्माना लगाया जाता है। दस डालर दिये बिना कोई यहाँ से बाहर नहीं जायेगा।

यह कहकर जज ने अपनी जेब से 10 डालर निकाले और बाहर निकालकर रख दिये और फिर पेन उठाया और लिखना शुरु किया। एक भूखे माँ और बेटे के प्रति अमानवीय व्यवहार हुआ है। इसलिये स्टोर मालिक पर अदालत 1000 डालर का जुर्माना करती है। इसके मालिक को उस बच्चे से माफी मांगनी चाहिये। अगर चौबीस घंटे में जुर्माना जमा नहीं किया तो स्टोर सील कर दिया जाये और इसके मालिक को गिरपतार करके जेल भेजा जाये।

फैसला सुनने के बाद कोर्ट में उपस्थित हर व्यक्ति की आंख में आंसू थे। उस लड़के की आंखों से झर-झर आंसू बह रहे थे। वह लड़का बार-बार जज को देख रहा था और अपनी आंखें पोंछता हुआ अदालत से बाहर निकल गया।

निर्लोभी रैदास

भक्त रैदास जाति से चमार **(Cobbler)** थे परन्तु वे साधु सन्तों की बहुत सेवा किया करते थे। एक बार एक साधु उनके पास आया। रैदास ने उसे भोजन कराया और अपने बनाये जूते उसे पहनाये। साधु बोला - रैदासजी, मेरे पास एक अनमोल वस्तु है। आप साधु संतों की सेवा करते हैं इसलिये वह मैं आपको दूँगा। एक रत्न जैसा पत्थर देते हुये कहा कि इसे पारस पत्थर कहते हैं और लोहे का स्पर्श कराने मात्र से वह सोने का का बन जाता है। ऐसा कहते हुये साधु ने रैदास की लोहे की रांपी (जिस पर रखकर मोची जूते बनाते हैं) को पारस के स्पर्श से सोने का बना दिया। यह देखकर रैदास को दुःख हुआ कि वे अब जूते कैसे बनायेंगे ? तब साधु ने कहा - अब आपको जूते बनाने की कोई आवश्यकता नहीं। इसी से हजारों रांपियां आ सकतीं हैं। इस पर रैदासजी बोले - यदि मैं सोना बनाता रहूँगा तो मेरे सोने की सुरक्षा कौन करेगा ? तब तो मुझे भगवान की भक्ति के बजाय सोने की ही चिन्ता रहेगी। किन्तु वह साधु नहीं माना और वह पारस पत्थर कमरे की छत में रखकर चला गया।

एक वर्ष बाद वह साधु फिर से रैदास के पास आया और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रैदास अभी गरीबी में जीवन जी रहा था। उसने जब रैदास से पारस पत्थर के बारे में पूछा तो रैदास ने कहा कि जहाँ रखकर गये थे वहीं रखा होगा। साधु को देखकर आश्चर्य हुआ कि पारस पत्थर जैसा का तैसा रखा हुआ है। तब साधु बोला - आप सचमुच धन्य हैं। आप चाहते तो इस पत्थर से सोना बनाकर कई मंदिर बना सकते थे, गरीबों को दान कर सकते थे। इस पर रैदास ने उत्तर दिया - महाराज ! अभी तो मैं चुपचाप भगवान का भजन कर लेता हूँ अगर मंदिर बनाता और दान के काम में लग जाता तो बहुत प्रसिद्धि मिलती और लोग मुझे बहुत तंग करते। मैं इस झंझट में नहीं पड़ना चाहता।

धन्य है रैदास की निर्लोभता।

वे कौन थे ?

1. वे कौन से मुनिराज थे गुलजार बाग, पटना से मोक्ष पधारे थे

उत्तर - श्री सुदर्शन मुनि सुदर्शन सेठ

2. वे कौन से मुनिराज थे जिनके प्रभाव से राजा ने हिरण को मारने के लिये धनुष चलाया और और उनका धनुष टूट गया था ?

उत्तर - श्री अभयघोष मुनिराज ।

3. वे कौन से मुनिराज थे जिनकी मुनि दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष एक ही दिन में हो गया था ?

उत्तर - गजकुमार मुनिराज।

4. वे कौन से मुनिराज थे जिनकी निंदा करने पर लक्ष्मीमति को कोढ़ रोग हो गया था ?

उत्तर - श्री समाधिगुप्त मुनिराज।

5. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने एक बंदर को पूर्व भव सुनाकर अणुव्रत ग्रहण कराये थे ?

उत्तर - श्री सुव्रत मुनिराज।

6. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने नेमिनाथ के दादाजी ने मुनिदीक्षा ली थी ?

उत्तर - श्री सुप्रतिष्ठ मुनिराज जो बाद में भगवान बन गये।

7. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे अकलंक स्वामी ने ब्रह्मचर्य व्रत लिया था ?

उत्तर - श्री चित्रगुप्त मुनिराज।

8. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने पुष्पडाल मुनिराज को प्रायश्चित दिया था ?

उत्तर - श्री वारिषेण मुनिराज।

9. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे राम के भाई भरत ने प्रतिज्ञा ली थी कि मैं राम के दर्शन मात्र से दीक्षा ले लूँगा ?

उत्तर - श्री द्युति मुनिराज।

10. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने यह लिखा कि सम्यग्दर्शन के बिना मनुष्य का जीवन मुर्दा के समान है ?

उत्तर - आचार्य कुन्दकुन्द मुनिराज ने अष्टपाहुड़ में।

dghnj ugk tk;---

वर्तमान के आधुनिक समय में मोबाइल आदि जीवन के अनिवार्य अंग बन गये हैं। इनके बिना जीवन के कई कार्य असंभव हो गये हैं। चाहे बैंक के कार्य हों, या गैस सिलेण्डर बुक करना हो, चाहे पढ़ाई करना हो या स्वाध्याय - हम सबकी आवश्यकता आज अनिवार्यता में बदल गई है। मोबाइल आदि से काम आसान होने के साथ अनेक समस्यायें भी खड़ी होतीं जा रहीं हैं। हमारी लापरवाही आज बच्चों की जान ले रही है। आज हर परिवार में एक या दो बच्चे ही होते हैं और सभी माता-पिता अपने बच्चों को जीवन की पूरी सुविधा देकर उनका पालन पोषण करने का प्रयास करते हैं। उनकी हर अच्छी बुरी इच्छा को पूरी करना माता-पिता का दायित्व बन गया है। बच्चों का जरा सा रोना घर वालों को बर्दाश्त नहीं होता। यदि बच्चा मोबाइल मांगता है तो न देने पर रोने लगता है तो तुरन्त घर वाले कहने लगते हैं कि रुलाओ मत बच्चे को, दे दो मोबाइल और बच्चे के मन में बैठ जाता है कि अपनी कोई भी मांग मनवाना है तो बस रोना शुरु कर दो। वह जिद्दी और गुस्सैल हो जाता है। और इस तरह बच्चा अच्छे-बुरे की पहचान नहीं कर पाता और बड़े होने पर जरा सी प्रतिकूलता उन्हें विचलित कर देती है। हमें याद है कि जब हम छोटे थे तो हमारी किसी भी गलत मांग पर पिटाई हो जाया करती थी फिर हमें यह महसूस हो गया कि हमारी गलत इच्छा पूरी नहीं होगी चाहे हम कितनी भी जिद कर लें।

आज अभिभावकों के अति लाड प्यार के दुष्परिणाम सामने लगे हैं। 30 अक्टूबर को जोधपुर के मंडोर क्षेत्र में रहने वाले 16 वर्ष के सौरभपुरी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सौरभ काफी प्रतिभाशाली छात्र था। रविवार को जब उसकी बहन उसके कमरे में उसे बुलाने के लिये गई तो देखा वह फांसी के फंदे पर लटक रहा था। कारण खोजने पर पता चला कि वह मोबाइल पर कार रेसिंग गेम खेलने का बहुत शौकीन था। वह कई - कई घंटे तक मोबाइल पर गेम खेलता रहता था। जब एक कार रेसिंग गेम हार गया तो दुखी होकर उसने आत्महत्या कर ली।

सौरभ यह नहीं समझ पाया कि वर्चुअल दुनिया से रियल दुनिया बिल्कुल अलग है। लेकिन जब वर्चुअल दुनिया ही वास्तविक लगने लगे तो ऐसी घटना होना स्वाभाविक है। ऐसे ही कर्नाटक के एक प्रसिद्ध हीरो पुनीत राजकुमार की मात्र 46 वर्ष की उम्र में मृत्यु हो गई। वहाँ उसके सात प्रशंसकों दुखी होकर आत्महत्या कर ली। आत्महत्या करने से उनकी तो दुर्गति हुई ही साथ उनके परिवार के सदस्यों को जीवन भर के लिये दुख दे गया।

इसी तरह भोपाल में चौथी कक्षा में पढ़ने वाली 12 साल की दुर्गा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। कारण बस इतना सा था कि दुर्गा पढ़ने में बहुत कमजोर थी। ऑनलाईन पढ़ाई के लिये उसे उसके पिता ने उसे मोबाइल दिलाया था। पर क्लास के बाद दिनभर मोबाइल पर गेम खेलती थी। उसकी दादी ने डांटते हुये कह दिया था कि दिनभर मोबाइल चलाती हो, जरा पढ़ाई पर ध्यान दिया करो। बस दादी की इतनी बात दुर्गा को पसंद नहीं आई और उसने अपने दुपट्टे से फंदा बनाकर आत्महत्या कर ली। मात्र 12 साल की उम्र और इतना गुस्सा।

हम अपने बच्चों को यह नहीं सिखा पा रहे कि असफलता भी जीवन का एक अंग है। हर व्यक्ति को हर कार्य में सफलता मिले ही ऐसा संभव नहीं होता। इसलिये असफलताओं को स्वीकार करना जीवन की कला है। बच्चे की हर जिद पूरी करना ही उसे कमजोर बनाता है। माता-पिता की अधिक महत्वकांक्षायें बच्चों को मानसिक रूप से कमजोर बना रहीं हैं। एक और घटना में 5 नवम्बर को राजस्थान के झुंझनू में 10वीं कक्षा के 14 साल के छात्र सौरभ ने खाली प्लॉट पर बने पानी के टैंक में कूदकर जान दे दी। अपने सुसाइड नोट में लिखा कि पापा-मम्मी मुझे माफ करना । मैं आपकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतर सका। आखिर वे उम्मीदें क्या हैं जो हम बच्चे की योग्यता से अधिक पूरी करवाना चाहते हैं ?

यदि हम ऐसी समस्याओं और दुर्घटनाओं से बचना चाहते हैं तो उन्हें सुविधाओं के साथ समय दें। उन्हें अपने जीवन के अनुभव सुनायें, अपने जीवन के संघर्ष और उन संघर्षों का सामना करने की सोच दें कि प्रतिस्पर्धा के दौर में अपने अपना संबल नहीं खोना और ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करने की सीख दें। घर के वरिष्ठ सदस्यों का अनुभव, माता-पिता की प्रेरणा और जिनवाणी के सिद्धांतों का अध्ययन उनके सुखमय जीवन की आधारशिला अवश्य बनेगा।

वैराग्य प्रसंग

मुंबई निवासी श्री वसंत भाई, रमेश भाई, विक्रम भाई कोटडिया की मातुश्री तारा बेन मणिलाल कोटड़ीया (ओराण निवासी) का 9 अक्टूबर 2021 को 87 वर्ष की आयु में पंचपरमेष्ठी के स्मरण एवं आत्मभावना पूर्वक देह परिवर्तन हुआ । सात दिन पूर्व ही माताजी ने गजपंथा और देवलाली के जिनालयों की भावना व्यक्त की थी जिसके फलस्वरुप उनके पुत्रों ने परिवार सहित इन क्षेत्रों की वंदना कराई थी । इस प्रसंग पर चहकती चेतना परिवार को 5000/- रुपये प्राप्त हुये । चहकती चेतना परिवार दिवंगत आत्मा के भव विराम की कामना करता हैं ।

चहकती चेतना

350 साल पहले औरंगजेब ने लगाया था पटाखों पर बैन

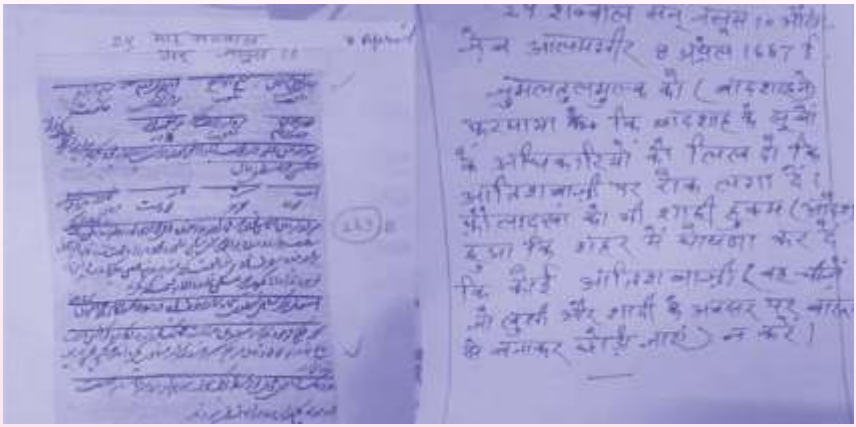

पटाखों से होने वाली हानियों के प्रति जन जागरण हेतु समय - समय पर प्रयास होते रहे हैं। आज से 350 वर्ष पहले औरंगजेब के समय पटाखों और आतिशबाजी पर प्रतिबंध लगाया गया था। इस आदेश में लिखा है -

बादशाह के सूबों के अफसरों को लिख दीजिये कि वे आतिशबाजी पर रोक लगा दें। शहर में भी घोषणा कर दें कि कोई आतिशबाजी न करे। इस आदेश में किसी त्यौहार का उल्लेख नहीं है और न ही कोई समय सीमा का उल्लेख है।इस आदेश के अनुसार लम्बे समय तक के लिये पटाखों पर रोक लगाई गई थी।

इस आदेश का पत्र अप्रेल 1667 में जारी हुआ था और यह बीकानेर के स्टेट आर्काइव में सुरक्षित रखा हुआ है।

crlu lkQ dku djxk ?

चूड़ा गांव में उन्होंने सदा की तरह आत्मकल्याण की प्रेरणा दी। उनका प्रवचन सुनकर एक पुलिसवाला उनके पास आया और बोला कि सब आपके बताये अनुसार आत्मसाधना करेंगे तो संसार का काम कौन करेगा ? गुरुदेवश्री बोले - करोड़पति बनने वालो ये नहीं सोचता कि यदि मैं करोड़पति बन जाऊंगा तो बर्तन साफ कौन करेगा ?

सदगुरु कैसे न कहूँ ?

केवल रवि किरणों से पंक्तियों वाली देव-शास्त्र-गुरु पूजन जैसी अमर रचना के रचयिता आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', कोटा के जिस जिनमंदिर में प्रवचन करते थे वहाँ गुरुदेवश्री की एक बड़ी फोटो लगी हुई थी। उसके कारण कोटा में विवाद खड़ा हो गया और सारी समाज एकजुट होकर फोटो निकालने के लिये दबाब डालने लगी और आंदोलन करने लगी। युगलजी भी अड़ गये कि किसी भी कीमत पर यह फोटो नहीं निकाला जायेगा और वे अनशन पर बैठ गये।

उस समय सोनगढ़ में शिविर चल रहा था। गुरुदेव तक बात पहुँची तो विवाद को शांत करने के लिये उन्होंने पण्डित रामजीभाई दोशी और पण्डित नेमीचंदजी पाटनी को कोटा जाने के लिये कहा। कोटा जाने के पहले दोनों विद्वान गुरुदेवश्री से मिलने गये तो गुरुदेवश्री ने कहा कि युगलजी से कहना कि वे व्यर्थ विवाद न करें,यदि समाज फोटो नहीं रखना चाहती तो फोटो उतार दें । इसमें क्या रखा है ?

कोटा पहुँचने पर जब दानों ने गुरुदेवश्री का आशय युगलजी को बताया तब युगलजी भीगे मन से कहा कि जो गुरु अपनी फोटो उतारने के लिये कहता है वही सदगुरु है। गुरुदेवश्री का यह आदेश पाकर मैं धन्य हो गया।

करुणामूर्ति गुरुदेवश्री

गुरूदेवश्री जब राजकोट में थे तब उन्हें मूलजी भाई से पण्डित टोडरमलजी रचित महान ग्रन्थ मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ मिला। इस ग्रन्थ को पढ़कर उन्हें अपूर्व आनंद हुआ। जो प्रति उन्हें मिली प्रकाशित नहीं थी बल्कि हस्तलिखित प्रति थी। 1928 में वीरजी भाई ने दामोदर सेठ के द्वारा भेजी गई रहस्यपूर्ण चिट्ठी मिली।बकसरा ग्राम में उन्होंने मोक्षमार्ग प्रकाशक का सातवाँ अधिकार स्वयं पेंसिल से पूरा लिखा। पहले वे लिखने के लिये स्याही (इंक) का प्रयोग करते थे जब उन्हें मालूम चला कि स्याही में सम्मूर्छन जीव होते हैं तब उन्होंने स्याही का प्रयोग करना बंद कर दिया। उस समय कच्ची पेंसिल आती थी। उसे बार-बार छीलना पड़ता था और जमीन पर घिसकर पैना करना पड़ता था।

धन्य मुनिराज हमारे हैं

दिगम्बर मुनिराज समस्त परिग्रह के त्यागी होकर निरन्तर आत्मसाधना में लीन में रहते हैं। दिगम्बर जैन समाज के अनेक साधर्मी मुनिराजों की भक्ति करते हैं और स्वयं को मुनिराजों का उपासक कहते हैं परन्तु उन्हें मुनिराजों का स्वरूप नहीं पता । दिगम्बर मुनिराज अर्थात प्रति समय आतमा के आनंद का रसपान करने वाले रसिया और बाहर में 28 मूलगुणों का निर्दोष पालन करने वाले वीतरागी संत। आइये जानते हैं मुनिराजों के 28 मूलगुण कौन से हैं -

संक्षेप में 5 महाव्रत, 5 समिति, 5 इन्द्रिय विजय, 6 आवश्यक, 7 शेष गुण

विस्तार से

1. **अहिंसा महाव्रत -** समस्त जीवों की हिंसा का त्याग।
2. **सत्य महाव्रत -** झूठ बोलने का त्याग।
3. **अचौर्य महाव्रत -** चोरी का सर्वथा त्याग यहाँ जल, मिट्टी भी बिना दिये न लेना।
4. **ब्रह्मचर्य महाव्रत -** शील गुण के 84000 दोषों से दूर शील के 84000 गुणों का पालन।
5. **अपरिग्रह महाव्रत -** 14 प्रकार के अतरंग और 10 प्रकार के बहिरंग परिग्रह का त्याग।
6. **ईर्या समिति -** हिंसा से बचने के लिये चार हाथ आगे की धरती देखकर चलना।
7. **भाषा समिति -** सभी जीवों के हित-मित-प्रिय वचन बोलना।
8. **एषणा समिति -** 46 दोष, 32 अंतराय और 14 मल दोषों से रहित उच्च कुल वाले श्रावक के यहाँ आहार ग्रहण करना।
9. **आदान निक्षेपण समिति -** शास्त्र, पिछी, कमण्डल देखभाल कर उठ्ठाना और रखना।
10. **प्रतिष्ठापना समिति -** मल-मूत्र-थूक आदि को जीव रहित स्थान पर त्याग करना।
11. **स्पर्शन इन्द्रिय विजय -** चेतन अर्थात् पुत्र-पुत्री, स्त्री आदि और अचेतन पदार्थ ठंडा, गरम आदि में राग - द्वेष नहीं करना।
12. **रसना इन्द्रिय विजय -** अच्छे - बुरे आहार में समता भाव रखना।

13. **घ्राण इन्द्रिय विजय -** सुगन्धित और दुर्गन्धित पदार्थों में सहज रहना।
14. **चक्षु इन्द्रिय विजय -** किसी भी प्रकार के दृश्य में राग-द्वेष नहीं करना।
15. **कर्ण इन्द्रिय विजय -** स्वयं की प्रशंसा या अच्छा सुनकर प्रसन्न न होना और स्वयं के बारे में अपशब्द या बुरा सुनकर दुखी नहीं होना।
16. **समता -** प्रतिदिन तीन बार सामायिक करना।
17. **वंदना -** पूज्य पदों के प्रति वंदना।
18. **स्तुति - देव** देव शास्त्र गुरु की आराधना ।
19. **प्रतिक्रमण -** जाने अनजाने में लगे दोषों के प्रति क्षमायाचना ।
20. **स्वाध्याय -** जिन सर्वज्ञ प्रणीत जिनवचनों का अध्ययन, चिंतन, मनन ।
21. **कायोत्सर्ग -** शरीर से भिन्न शुद्धात्मा की साधना ।
22. **अस्नान -** मुनिराज जीवन में कभी स्नान नहीं करते।
23. **भू शयन -** मुनिराज सोने के लिये पलंग, बिस्तर का प्रयोग नहीं करते, वे जमीन पर एक करवट सोते हैं।
24. **वस्त्र त्याग -** वस्त्रों का त्याग होता है अर्थात् दिगम्बर मुद्रा होती है।
25. **केशलोंच -** आगम की विधि अनुसार सिर, दाढ़ी और मूंछ के बाल हाथ से उखाड़ते हैं।
26. **एक बार भोजन -** दिन में एक बार थोड़ा भोजन ग्रहण करते हैं।
27. **मंजन नहीं करना -** वे कभी मंजन नहीं करते।
28. **खड़े होकर भोजन -** मुनिराज एक ही स्थान पर खड़े-खड़े भोजन करते हैं।

अपनी आत्मा के अतीन्द्रिय रस के भोगी, मोक्ष मार्ग के उपदेशदाता और 28 मूलगुणों का निर्दोष पालन करने वाले दिगम्बर मुनिराजों के चरणों में अनंत वंदन।

उल्टे-पुल्टे अक्षरों से सही शब्द बनाइये के उत्तर

उत्तर : 1. आतम 2. समयसार 3. चेतना 4. प्रातिहार्य 5. णमोकार 6. समिति 7. प्रायश्चित 8. सामायिक 9. पावापुरी 10. पावागढ़ 11. अनुदिश 12. सिद्धालय 13. प्रवचन 14. दिव्यध्वनि 15. केवलज्ञान

प्रश्न आपके समाधान जिनवाणी के

1. शंका - केश लोंच को परिषह में क्यों नहीं गिनाया ?

   समाधान - केश को कटवाने से दुःख नहीं होता इसलिये केश लोंच परिषह में नहीं गिनाया। - जिनेश कुमार जैन, वर्धा

2. शंका - जब रात्रि में पूजन करना मना है तो विवाह समारोह में रात्रि में पूजन क्यों की जाती है ?

   समाधान - विवाह कार्य दिन में ही करना चाहिये। रात्रि में विवाह पूजन विधि करना धर्म विरुद्ध कार्य है। - प्रमोद कुमार जैन, पनागर

3. शंका - वीतरागी मंदिर में कीमती वस्तुओं की क्या आवश्यकता है ?

   समाधान - आजकल जिनमंदिरों में भक्ति की जगह आडम्बर मुख्य होने लगा है। प्राचीन मंदिरों में छत्र भामण्डल आदि पत्थर के ही होते थे। जिनमंदिरों में कीमती समान रखना चोरों को निमंत्रण देना है।

   - नीरज कुमार जैन, पन्ना

4. शंका - क्या फल को काटने से वह अचित्त (जीव रहित) हो जाता है ?

   समाधान - फल को काटकर नमक आदि मिलाने से अचित्त हो जाता है।

   - मिली जैन, कटनी

5. शंका - जहाँ दिगम्बर मंदिर न हो तो क्या वहाँ श्वेताम्बर प्रतिमा या चंदन लगी प्रतिमा के दर्शन कर सकते हैं या नहीं ?

   समाधान - निर्ग्रन्थ और निर्लेप प्रतिमा ही वंदनीय है, परिग्रह सहित प्रतिमा वंदनीय नहीं है। - आभा जैन, पाली

6. शंका - ऋषभनाथ तो प्रथम तीर्थंकर थे तो उन्होंने सर्वप्रथम किसे वंदन किया था ?

   समाधान - ऋषभनाथ ने सर्वप्रथम सिद्ध भगवान को नमस्कार किया था।

   - मणिलाल जैन, भरतपुर

7. शंका - क्या क्षुल्लक, आर्यिका के चरण स्थापित किये जा सकते हैं ?

   समाधान - नहीं। यह आगम सम्मत नहीं है। - मीरा जैन, अजमेर

8. शंका - क्या किसी मंदिर की छाया मकान पर अशुभ माना जाता है ?

   समाधान - किसी जिनागम में इसका उल्लेख नहीं है, यह मन से बनाई हुई बातें हैं।

   - एम.एल.जैन, किशनगंज

होनकार बिटिया है

माहिरा

कहते हैं कि बच्चों की सबसे पहली पाठशाला उसका घर है और उसकी प्रथम गुरू उनकी माँ। इसी अमृत वाक्य को सार्थक किया है पुणे की रहने वाली माहिरा ने। मात्र 4 साल की माहिरा को जिनधर्म की बहुत रुचि है। पूर्व भव के संस्कारों और इस भव के पिता श्री मोहित जैन और माता श्रीमति प्रियंका ने संस्कारों को आगे बढ़ाया है। माहिरा को को आचार्य उमास्वामी रचित तत्वार्थ सूत्र के 3 अध्यायों के सारे सूत्र, भक्तामर स्तोत्र के 22 छन्द, अपूर्व अवसर, पार्श्वनाथ स्तोत्र, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल रचित सहजता के सारे काव्य, अनेक भजन, धार्मिक बाल कवितायें याद हैं। साथ ही वह अर्हम पाठशाला की नियमित छात्रा है। वह इतनी छोटी सी उम्र में ही अनेक प्रतियोगिताओं और धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेती रहती है।

चहकती चेतना परिवार की ओर से माहिरा को उसके धर्ममय मंगल जीवन की मंगल शुभकामनायें।

हमारे नये परम संरक्षक

वर्ली - मुम्बई निवासी श्री श्रेणिक विनय लुहाड़िया ने चहकती चेतना के नये परम संरक्षक के रूप में अपनी स्वीकृति प्रदान की है। श्री श्रेणिक जी अजमेर निवासी स्व. श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया के पौत्र एवं श्री विनय लुहाड़िया के सुपुत्र हैं। श्री पूनमचंदजी ने अजमेर में रहते हुये जिनशासन के प्रचार-प्रसार में बहुत योगदान दिया और पुरानी मण्डी में एक सुन्दर जिनालय का निर्माण कराया और अजमेर में ही ऋषभायतन के नाम से एक विशाल संकुल का निर्माण किया है। श्री विनयजी लुहाड़िया और उनका पूरा परिवार भी जिनशासन की प्रभावना में तन-मन-धन से अपना योगदान देता रहा है। श्री श्रेणिकजी को परम संरक्षक रूप में पाकर चहकती चेतना परिवार उनका हार्दिक आभार ज्ञापित करता है।

हमारे सहायक

छिन्दवाड़ा की मूल निवासी श्रीमति पुष्पलता अजित कुमारजी जैन ने परम सहायक के रूप में स्वीकृति प्रदान करके चहकती चेतना को संबल प्रदान किया गया है। श्री पुष्पलताजी जैन छिन्दवाड़ा में जीजी बाई के रूप ख्यात रहीं हैं और विगत कई वर्षों से जिनमंदिर निर्माण, जिनश्रुत के प्रकाशन, शिविर संचालन, असहाय सहायता, औषधालय आदि में पूरे मनायोग से सहयोग प्रदान करती रहीं हैं। वर्तमान में आप मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में बुढ़ार नगर में स्थायी रूप से निवास कर रहीं हैं। संस्था आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

चहकती चेतना के केलेण्डर के प्रकाशन में सहयोग आमंत्रित

प्रतिवर्ष की भांति चहकती चेतना का वार्षिक तिथि केलेण्डर प्रकाशित हो रहा है। इसमें विशेष थीम के साथ तीर्थंकरों के पंचकल्याणक की तिथियाँ, प्रमुख जैन एवं राष्ट्रीय पर्व आदि की जानकारी प्रकाशित होती है।अप्रैल से मार्च तक की तिथियों वाला होता है । यह केलेण्डर देश के अधिकांश राज्यों में भेजा जाता है। इसमें आप अपनी फर्म, प्रतिष्ठान, संस्थान, धार्मिक संस्था या व्यक्तिगत रूप से विज्ञापन देकर सहयोग कर सकते हैं। प्रत्येक पेज के नीचे निर्धारित स्थान पर विज्ञापन देने की राशि मात्र 11000/- यह केलेण्डर मुख्यतः निःशुल्क रूप से वितरित किया जाता है। आप विज्ञापन देने के लिये संपादक श्री विराग शास्त्री 9300642434 से संपर्क कर सकते हैं।

साथ ही केलेण्डर प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी उक्त नम्बर पर व्हाट्सएप से आर्डर कर सकते हैं।

देवलाली में वीर निर्वाण महोत्सव सम्पन्न

समयसार : कहान शताब्दि समारोह वर्ष के अंतर्गत देवलाली में स्थित श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत जिनालय में वीर निर्वाण महोत्सव सानंद संपन्न हुआ। दिनांक 1 नवम्बर से 5 नवम्बर तक आयोजित इस बेला पर श्री समयसार कलश मण्डल विधान का आयोजन हुआ। प्रतिदिन पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के सीडी प्रवचनों के साथ ऑनलाइन माध्यम से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर एवं विशेष आमंत्रण पर पधारे पण्डित अनिल शास्त्री भिण्ड एवं स्थानीय विद्वान ब्र. अभिनन्दनकुमारजी और पण्डित हेमचन्दजी हेम के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। इस महोत्सव में पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, श्री विराग शास्त्री जबलपुर, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर के व्याख्यान का लाभ मिला। विधान की सम्पूर्ण विधि श्री विराग शास्त्री जबलपुर के मार्गदर्शन में पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा विधानाचार्यत्व एवं पण्डित उर्विश शास्त्री पिड़ावा, पण्डित समकित शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुआ।

मंगलायतन में वीर निर्वाण महोत्सव संपन्न

समयसार : कहान शताब्दि समारोह वर्ष के अंतर्गत तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़ में श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़ एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के संयुक्त तत्वावधान में 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक वीर निर्वाण महोत्सव सानंद संपन्न हुआ।

le;lkj & dgku 'krkfCn egkRlo dk vrxr
tcjk esa fl)pdz fo/kku lEiUu

समयसारः कहान शताब्दि महोत्सव के अंतर्गत चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में मध्यप्रदेश के दमोह जिले जबेरा में सिद्धचक्र मण्डल विधान उत्साह के साथ संपन्न हुआ। दिनांक 16 अक्टूबर से 23 अक्टूबर 2021 तक आयोजित इस कार्यक्रम में प्रातः जिनेन्द्र प्रक्षाल और नित्य नियम पूजन के पश्चात विधान की पूजन संपन्न हुई। मुख्य प्रवचनकार के रूप में युवा विद्वान और प्रखर प्रवक्ता पण्डित अनुभव जैन मंगलार्थी, करेली के पंचास्तिकाय ग्रन्थराज पर स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। दोपहर की व्याख्यानमाला में वरिष्ठ विद्वान पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित सुदर्शनजी बीना, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सुदीपजी बीना, पण्डित आप्तअनुशीलजी शास्त्री दमोह के द्वारा स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम के आमंत्रणकर्ता श्री कमलजी, श्री प्रवीणजी, श्री सुशीलजी सिंघई परिवार जबेरा थे। यह कार्यक्रम जिनमंदिर की आठवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में मुमुक्षु मण्डल जबेरा द्वारा आयोजित किया गया। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री जबलपुर के कुशल निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के विधानाचार्यत्व में सांनद संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में दमोह, बीना, जबलपुर, अभाना, खनियांधाना, ललितपुर, सतना के साधर्मी भाई-बहिनों ने पधारकर लाभ प्राप्त किया। अंतिम दिन श्री जिनेन्द्र शोभायात्रा का मंगल आयोजन किया गया।

आरोन में दशलक्षण पर्व सानंद सम्पन्न

पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व पर संपूर्ण देश में जिनेन्द्र आराधना और आत्म आराधना के कार्यक्रम सांनद संपन्न हुये। इस क्रम में मध्यप्रदेश के गुना जिले के आरोन नगर में विविध कार्यक्रमों पूर्वक दशलक्षण पर्व संपन्न हुआ। इस अवसर पर जबलपुर से पधारे श्री विराग शास्त्री के द्वारा प्रातः परमार्थ वचनिका और रात्रि दशधर्म पर स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। दोपहर की सभा में पण्डित अमन शास्त्री द्वारा गुणस्थान विषय पर कक्षा का और मंगलार्थी पण्डित धर्मेशजी द्वारा स्वाध्याय का लाभ मिला। इस अवसर प्रातः दशलक्षण विधान का आयोजन भी हुआ। विधान में मंगलार्थी अंकितजी, अंकुरजी, आदर्शजी का लाभ प्राप्त हुआ ।

दिनांक 7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना और श्री विराग शास्त्री, जबलपुर का सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आरोन में नवनिर्मित जिनमंदिर के पंचकल्याणक महोत्सव की तिथियों की घोषणा हुई और पंचकल्याणक के प्रमुख पात्रों के चयन किया गया। यह पचंकल्याणक महोत्सव 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2021 तक भव्यतापूर्वक आयोजित किया जायेगा।

पिड़ावा में मोक्षायतन संकुल का शिलान्यास संपन्न

समयसार : कहान शताब्दि समारोह वर्ष के अंतर्गत राजस्थान के झालावाड़ जिले के पिड़ावा में श्री शान्ति -कुन्थु -अरनाथ कुन्दकुन्द-कहान दिगंबर जैन ट्रस्ट पिड़ावा द्वारा **मोक्षायतन** नाम से नवीन संकुल का शिलान्यास संपन्न हुआ। दिनांक 24 और 25 अक्टूबर 2021 को प्रथम दिवस प्रातः पण्डित हितेशभाई चौवटिया मुम्बई का व्याख्यान दोपहर में पण्डित अशोकजी जैन के निर्देशन में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन हुआ और दूसरे दिन प्रातः भव्य शोभायात्रापूर्वक संकुल स्थल की शुद्धि की गई। इसके पश्चात पूज्य गुरूदेवश्री का सीडी व्याख्यान और पण्डित रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर का व्याख्यान हुआ, तत्पश्चात् श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़ की अध्यक्षता एवं श्री महीपालजी ज्ञायक के मुख्य आतिथ्य में शिलान्यास सभा का आयोजन हुआ। सभा के बाद जिनमंदिर का शिलान्यास श्री प्रेमचन्दजी ध्याताजी बजाज परिवार कोटा के द्वारा, स्वाध्याय भवन का शिलान्यास डॉ. अशोक - ऋतु जैन इंदौर, समयसार कीर्ति स्तम्भ का शिलान्यास श्री वीरेन्द्रजी हरसौरा परिवार के द्वारा किया गया। सभा का संचालन पण्डित संजय जी शास्त्री, कोटा, श्री विराग शास्त्री जबलपुर,सहमंत्री श्री अमित अरिहंत मंडावरा द्वारा किया गया। संकुल का परिचय संयोजक श्री नगेशजी पिड़ावा और आभार श्री विजयजी बड़जात्या इंदौर द्वारा व्यक्त किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली द्वारा किया गया। ज्ञातव्य है कि इस कार्यक्रम के पूर्व 15 अक्टूबर को इसी स्थल पर बनने वाले विद्यालय का शिलान्यास डॉ. बासन्ती बेन शाह और मुक्ति मण्डल संघ मुम्बई की सदस्याओं द्वारा किया गया।

सुखद बात यह है कि यह संकुल और जिनमंदिर मात्र 18 महीनों की अल्प अवधि में पूरा हो जायेगा।

इटारसी में दशलक्षण महापर्व संपन्न

श्री तारण समाज संगठन सभा इटारसी पर दशलक्षण महापर्व अनेक आयोजनों पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर टीकमगढ़ से पण्डित आशीष शास्त्री को आमंत्रित किया गया। इस मांगलिक अवसर पर प्रातः कमल बत्तीसी का नियमित पाठ, श्री मालारोहणजी पर मांगलिक प्रवचन हुये। रात्रिकालीन सभा दशधर्म पर मंगल प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित आशीष शास्त्री के मार्गदर्शन रोचक व ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम संपन्न हुये।

'kkdkgkjh tkuojk dh igpku

1. शाकाहारी जानवर जीभ निकालकर पानी नहीं पीते, बल्कि मुंह को पानी में डुबोकर होंठों की की सहायता से पानी पीते हैं। पानी पीते समय कोई आवाज नहीं आती।
2. दांत और नाखून सपाट होते हैं तथा बचपन के दांत गिरकर दुबारा आते हैं।
3. इनकी दाढ़ होती है जिससे वे भोजन को चबाते हैं और पाचन कार्य मुंह से प्रारंभ होता है।
4. पेट की आंतें उनके शरीर से आठ से दस गुना लम्बी होती हैं।
5. एक समय में एक या दो बच्चे ही होते हैं। जैसे - गाय, हिरण आदि।
6. शाकाहारी जानवरों के बच्चों की जन्म के समय आंखें खुलीं हुईं रहती हैं।
7. आंखे बादाम के आकार की होतीं हैं, अधिक दूरी का देखने में असमर्थ होते हैं। रात्रि में भी अधिक दिखाई नहीं देता और सूंघने की शक्ति अधिक तीव्र नहीं होती।
8. हड्डियाँ मजबूत होतीं हैं और इनके घाव जल्दी ठीक हो जाते हैं।
9. भोजन को चबाने के लिये जबड़ा ऊपर-नीचे, दायें-बायें चारों ओर घूम सकता है।
10. शाकाहारी जानवरों का स्वभाव और चेहरा शांत होता है।
11. अधिकांश जानवर लम्बी आयु के होते हैं।
12. शरीर से पसीना निकलता है।
13. चलते समय पैरों की आवाज होती है।
14. हरी घास आदि पचाने की सामर्थ्य होती है।

ek lkgkjh tkuojk dh igpku

1. मांसाहारी जानवरों के पैर गद्देदार होते हैं, जिसे कूदते या चलते समय उनके पैरों की आवाज नहीं आती।
2. नाखून और दांत नुकीले होते हैं जिससे वे अपने शिकार को फाड़कर खा सकें। दांत एक बार गिरने के बाद दुबारा नहीं आते।
3. जीभ से पानी पीते हैं। इनके पानी पीने में चप-चप की आवाज आती है।
4. आंते छोटी होतीं हैं ताकि मांस अधिक समय तक पेट में न रहे।
5. इनके मुंह में दाढ़ नहीं होती, ये सीधे भोजन को निगल जाते हैं।
6. मांसाहारी जानवरों के बच्चों की आंखें जन्म के 3-4 दिन बाद खुलतीं हैं।
7. हरी घास आदि पचाने की सामर्थ्य नहीं होती।
8. आंखे गोल होतीं हैं, अधिक दूरी का आसानी से देख सकते हैं। रात्रि में भी साफ दिखाई देता है और सूंघने की शक्ति बहुत तीव्र होती है।

जन्मदिवस पर जन्म-मरण के आभाव की भावना
ही सच्चा जन्मदिवस है ।

जन्म दिवस

जिनशासन पर मोहित हो तुम, इसका हो श्रद्धान।
कर्म चक्र का नाश करो, बनो सिद्ध भगवान।।

माहिरा मोहित जैन, पुणे 24 अक्टूबर 2021

ज्ञाना अपना भाव है, ज्ञाना सुख की खान।
ऋषभ धर्म की भावना, से हो मुक्ति विश्राम।।

ज्ञाना ऋषभ जैन, दादर, मुम्बई 26 अक्टूबर 2021

कविता

मायाचारी की दशा

रखे बांसुरी सब होंठों पर, पर पीटें सब ढ़ोलक को,
भेद देख ढ़ोलक ने पूछा, पक्षपात ऐसा क्यों हो।।
पक्षपात यह ना कहलाता, यथा काम फल मिलता है,
पोल दिखाओ तुम तो अपनी, सो छल का फल मिलता है।।
कहे बांसुरी मैं तो अपनी, पोल खोलकर रखती हूँ।
सात-सात छेदों के द्वारा, सब कुछ बाहर करती हूँ।।
तुम तो सब कुछ अपने अंदर, छिपा-छिपाकर रखते हो।
इसीलिये तो डण्डे द्वारा, पिटकर सब कुछ सहते हो।।
मैं अपने सारे दोषों को, बाहर फेंका करती हूँ।
इसीलिये तो सब लोगों के, होंठों पर नित रहती हूँ।।
सो मेरे प्यारे भाई तुम, छोड़ो छल मायाचारी।
तभी प्यार सब जग का पाओ, बन जाओ सुव्रत धारी।।

कविता

टन टन टन टेलीफोन, सिद्ध प्रभु का आया फोन।
भव दुःखों की बात सुनी तो, चेतन हो गया बिल्कुल मौन।
टन टन टन टेलीफोन, सिद्ध प्रभु का आया फोन।
चार गति में अब न रहूँगा, सम्यक् दर्शन अभी करुँगा।
सिद्ध प्रभु तो सच्चे साथी हैं, इस दुनिया में अपना कौन।
टन टन टन टेलीफोन, सिद्ध प्रभु का आया फोन।
आतम सुख की बात बताते, गुण अनंत वैभव बतलाते।
आत्म देव की बात सुनी तो पहचाना, अब मैं हूँ कौन।।
टन टन टन टेलीफोन, सिद्ध प्रभु का आया फोन।

सत्य

सत्य से हो जीवन श्रृंगार,
सत्य ही हो जीवन आधार।
सत्य मार्ग सत्पथ की शान,
सत्य बिना जग हो हैरान।
सत्य मार्ग का हो विश्वास,
सत्य कुमार्ग का करे विनाश।
सत्य मार्ग से मिलता मान,
झूठ वचन से हो अपमान।
झूठा मानव सदा दुःखी,
सत्य वचन से मिले खुशी।
झूठे मन में हर पल डर,
सच्चा व्यक्ति रहे निडर।
सच्चाई की सदा विजय।
बोलो सत्य की जय जय जय।।

– विराग

समयसार : कहान शताब्दी वर्ष के अंतर्गत

सम्पन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

अवश्य पधारिये मंगल महोत्सव

पाषाण से परमात्मा बनने का उत्सव

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के श्रुत प्रभावना योग में
मध्यप्रदेश के गुना नगर के समीप स्थित आरोन नगर में
नव निर्मित श्री पंचबालयति जिनमंदिर का भव्य

श्री १००८ नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब

पंचकल्याणक

प्रतिष्ठा महोत्सव

सोमवार, 19 दिसम्बर से शुक्रवार 24 दिसम्बर 2021 तक

- कोरोना काल के बाद मुमुक्षु समाज का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
- पंच बालयति भगवन्तों की मंगल प्रतिष्ठा का क्षण
- आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का प्रत्यक्ष दर्शन
- देश के उच्चकोटि के विद्वानों का समागम
- साधर्मी मिलन का मंगल सुअवसर

प्रतिष्ठाचार्य - अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान
बाल ब्र. पंडित अभिनंदनकुमार जी शास्त्री, खनियांधाना

मार्गदर्शन - तत्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
निर्देशक - डॉ. राकेशजी शास्त्री, नागपुर एवं श्री विराग शास्त्री, जबलपुर
मंच निर्देशक - पंडित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
मंच संचालक - पंडित संजयजी शास्त्री, कोटा

विद्वत सान्निध्य - ◆पंडित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर ◆ डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर
◆पंडित राजकुमारजी गुना ◆ डॉ. संजीवजी गोधा, जयपुर
◆पंडित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर
◆डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ आदि अनेक विद्वान

आप इसे हमारा वात्सल्यमयी आमंत्रण स्वीकार आरोन नगर में अवश्य पधारें ।

नोट - कृपया आने के पूर्व आवास आरक्षित अवश्य करायें ।

निवेदक : श्री 1008 नेमिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, आरोन, जि. गुना म.प्र.

आरोन भोपाल-सागर के मुख्य रेल्वे मार्ग पर स्थित गुना नगर से 35 किमी और
अशोक नगर से 35 किमी की दूरी पर स्थित है ।

संपर्क - अशोक कुमार जैन-9893745053, आशीष जैन - 9926236788, आजाद जैन -